जुलाई-सितम्बर, 2023

समसामयिक हाइकु संचयनिका

हाइकु मञ्जूषा

संपादक
प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

सूचना

'हाइकु मञ्जूषा' (समसामयिक हाइकु संचयनिका) त्रैमासिक हाइकु पत्रिका अक्तूबर-दिसंबर, 2023 का आगामी अंक हाइबुन विशेषांक रहेगा, अस्तु रचनाकार बन्धुओं से आग्रह है कि अपनी एक उत्कृष्ट हाइबुन रचना मेरे वाट्सएप नं. 7828104111 पर भेज कर रचनात्मक सहयोग प्रदान करेंगे।

संपादक : हाइकु मञ्जूषा

हाइकु मञ्जूषा त्रैमासिक

(सदस्यता शुल्क)

एक वर्ष	-	400 रुपये (रजिस्टर्ड डाक से)
पाँच वर्ष	-	1600 रुपये (रजिस्टर्ड डाक से)

Account detail : PRADEEP KUMAR DASH

A/c No. : 3282604179, IFSC : CBIN0281208

Central bank of India, Sitapur, (C.G.)

Mob. 7828104111

हाइकु मञ्जूषा

समसामयिक हाइकु संचयनिका

जुलाई-सितम्बर : 2023 (त्रैमासिक)

संपादक

प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संरक्षक

डॉ. मिथिलेश दीक्षित

संपादक मण्डल

अविनाश बागड़े (नागपुर)
देवेन्द्र नारायण दास (बसना)
केशव मोहन पाण्डेय (नई दिल्ली)

प्रकाशन स्थल : साँकरा, जिला-सारंगढ़ (छ.ग.) पिन – 496554

मो.नं. – 7828104111

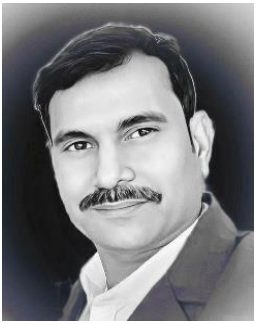

संपादकीय...

प्रिय हाइकुकार मित्रों, सादर सस्नेहाभिवादन ! आठवीं शताब्दी में जापान के इतिहास में "नारा युग के नाम से अभिहित "मान्योशू" काल में ताँका (वाका), सेदोका और चोका तीन काव्य शैलियां प्रसिद्ध हुईं। इसके उपरांत हाइकु, सेन्रियु, रेंगा (श्रृंखलित पद्य), हाइगा, कतौता एवं अन्य कई काव्य शैलियां जापानी साहित्य में प्रचलित हुईं। गद्य/पद्य के मिश्रित रूप "हाइबुन" की शैली यात्रा साहित्य के रूप में प्रचलित रही। इन सभी शैलियों में 5-7 वर्ण पंक्तियों की प्रमुखता देखी जा सकती है। इन शैलियों में "हाइकु" अत्यधिक प्रचलित काव्य शैली के रूप में प्रसिद्ध है। जापान की ये बहुचर्चित काव्य शैलियाँ भारतीय साहित्य में भी विशेष चर्चित व प्रतिष्ठित हैं।

हाइकु मञ्जूषा के वाट्सएप तथा फेसबुक के पटल पर आने वाले समस्त हाइकुओं में से चयनित उत्कृष्ट हाइकुओं को ही अर्थात हाइकु के मानदण्ड पर खरे उतरने वाले हाइकुओं को ही संचयनिका में प्रकाशित किये जा रहे हैं। रचनाकार साथी हाइकु भेजने हेतु दोनों पटल में से किसी भी पटल को चयन कर सकते हैं। 'हाइकु मञ्जूषा' में हाइकु प्रकाशित किये जाने हेतु सदस्यता

शुल्क भेजने की अनिवार्यता नहीं है। केवल हाइकु स्तरीय होना चाहिए परंतु पत्रिका की हार्डकापी केवल सदस्यों तक ही भेज पा रहे हैं। अन्य पाठकों तथा रचनाकारों के लिए पत्रिका लिंक दे दिया जाता है कि ताकि वे पत्रिका पढ़ कर अपने विचारों को हमारे पास अवगत करा सकें। पत्रिका 'हाइकु' पर केन्द्रित है, तथापि जापानी विधाओं पर बीच-बीच-बीच में विशेषांक प्रकाशित किये जाते रहेंगे। हाइकु मञ्जूषा का आगामी अक्तूबर-दिसम्बर 2023 का अंक हाइबुन विशेषांक प्रकाशित किया जाना निर्धारित किया गया है।

स्मरण योग्य बात यह कि- 'हाइबुन' एक गद्य कविता है, इसके गद्य में पद्य के पुट रहते हैं। इसे यात्रा विवरण के रुप में लिखा जाता है। यात्रा संदर्भ में बाशो का कथन है कि - "हर दिन एक यात्रा है, और यात्रा ही घर है।" हाइबुन का "गद्य" हाइकु का स्पष्टीकरण नहीं होता और इसमें उल्लेखित हाइकु गद्य की निरंतरता भी नहीं है। गद्य पाठ में प्रत्येक शब्द की गिनती गद्य कविता की तरह होनी चाहिए। स्तरीय हाइबुन गद्य पाठ को सीमित करता है, जैसे कि उत्तम हाइबुन में 20 से 180 शब्द एवं अधिकतम दो पैराग्राफ़ पर्याप्त हैं। इस लघु गद्य में कसावट आवश्यक है। हाइबुन में आमतौर पर केवल एक हाइकु सम्मिलित किया जाता है, जो गद्य के बाद होता है, गद्य के चरमोत्कर्ष के रूप में 'हाइकु' अपनी सेवा प्रदान करते हुए हाइबुन का प्रतिनिधित्व करता है।

गद्य और हाइकु दोनों के मिश्रण में रस ही महत्वपूर्ण है। गद्य को उस गहराई से जोड़ना चाहिए जिसके साथ हम हाइकु का अनुभव कर सकें। हाइबुन की महत्ता हाइकु को गद्य के अर्थ से सहज जोड़ना बहुत महत्वपूर्ण है। हाइबुन के लेखक को संवेदनशील होकर भी निरपेक्ष होना चाहिए अन्यथा यात्रा के स्थान पर यात्री के प्रधान हो उठने की संभावनाएं बढ़ जाएगी, तथा वह अभिव्यक्त यात्रा साहित्य हाइबुन न रहकर आत्म चरित्र या आत्म स्मरण बन सकता है। इस विधा के पीछे का उद्देश्य हाइबुन लेखक के रमणीय अनुभवों

को हुबहू पाठक तक प्रेषित करना है। जिसके माध्यम से पाठक उस अनुभव को आत्मसात कर सके उसे अनुभव कर सके।

आगामी अक्तूबर-दिसम्बर 2023 के हाइबुन विशेषांक हेतु आप सभी मर्मज्ञ रचनाकारों से आग्रह है कि हाइबुन के मानदण्डों पर खरी उतरने वाली एक उत्तम हाइबुन रचना मेरे वाट्सएप मो. नं. 7828104111 पर भेज कर रचनात्मक सहयोग अवश्य प्रदान करेंगे। इति शुभम्... आपके स्नेहिल सहयोग की प्रतीक्षा में आपका मित्र -

- प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संपादक : हाइकु मञ्जूषा

इस अंक के हाइकुकार

अमिता शाह ‘अमी’, अरुण आशरी, अल्पा जीतेश तन्ना, अयाज़ ख़ान, अलंकार आच्छा, अविनाश बागड़े, डॉ. आनंद प्रकाश शाक्य, आभा दवे, आर० बी० अग्रवाल, आरती परीख, आशा ज्योति, इंदिरा किसलय, ए. ए. लूका, अंजनी कुमार सुधाकर, कल्पना कामदार, कश्मीरी लाल चावला, क्रांति, कुन्दन पाटिल, कैलाश कल्ला, गीता पुरोहित, गंगा पांडेय "भावुक", चिन्मय शुक्ल, चंद्रभान मैनवाल, ज्योतिर्मयी पंत, तुकाराम पुंडलिकराव खिल्लारे, डॉ. दीपा, देवेन्द्र नारायण दास, देवयानी बनर्जी, निगम राज़, नीता छेड़ा, डॉ. नीना छिब्बर, पवन कुमार जैन, प्रतिमा प्रधान, प्रदीप कुमार दाश 'दीपक', प्रमोदिनी शर्मा, प्रवीण सिंह बी. सिन्दल, पुष्पा सिंघी, पूजा महेश, पुष्पा मेहरा, पुष्पा सिन्हा, पुष्पा त्रिपाठी ‘पुष्प’, पूनम मिश्रा 'पूर्णिमा', डॉ. भारती वर्मा 'बौड़ाई', भीकम सिंह, मधु गुप्ता 'महक', मधु सिंघी, मनीष कुमार श्रीवास्तव, डॉ. मिथिलेश दीक्षित, मीनाक्षी कुमावत 'मीरा', मीरा सिंह ‘मीरा’, मुकेश शर्मा ‘ओम’, मुरारी स्वामी, मंजु महिमा, मंजुलता गुप्ता, राकेश भैया, राजकिशोर राजपूत, राजकुमार चौहान, राजीव नामदेव 'राना लिधौरी', राजेन्द्र सिंह राठौड़, राधावल्लभ अग्रवाल, रीमा दीवान चड्ढा, रूबी दास "अरु", डॉ० विष्णु शास्त्री 'सरल', वृंदा पंचभाई, डॉ. शेख अब्दुल वहाब, सत्येन्द्र छिब्बर, सन्तोष खन्ना, सरस दरबारी, स्वाति गुप्ता 'नीरव', सीमा शर्मा, सुजाता शिवेन, सुधा मिश्र, सुनीता दीक्षित 'श्यामा', सुनंदा भावे, सुभाष शर्मा, सुरेन्द्र बांसल, डॉ. सुरंगमा यादव, डॉ. सुशील शर्मा, सूर्य नारायण गुप्त सूर्य, संतोष बुधराजा, हंस जैन, श्रवण चोरनेले 'श्रवण', श्रीराम साहू ‘अकेला’

उत्कृष्ट हाइकु

अँखियाँ घिरीं
पलकों में सपने
नशे में सने।

चाँद है कूदा
खिड़की में से झाँके
प्रेम को ताँके।

नथ झूलती
होठों पर टिकती
गीत बुनती।

यादों की फ्रेम
उतरती तस्वीरें
अदृश्य धीरे।

सोच की नदी
मोड़े विचारधारा
छूटे किनारा।

नाजुक से हैं
खयालात मन में
झरे पंखुड़ी।

ख्वाब रखे थे
भूल गई ठिकाना
नींद का आला।

बादल घड़ा
उंडेलता है पानी
भीगती धरा।

एक आधार
दीपक का उजाला
भरोसा पाला।

रिश्ते टूटते
घमंड़ बलिवेदी
भेंट चढ़ते।

धुआँ उदास
जले अगरबत्ती
भीतर आग।

भोर ने बाँधे
रात के काले बाल
सूर्य निकला।

दूर किनारा
रवि ढलता हुआ
छूटा सहारा।

बुहारुं घर
मिलते खोये पल
नैन सजल।

न हो निर्मूल
वृक्ष का चित्कार
धरा उजड़े।

-अमिता शाह 'अमी'

नज़्म ग़ज़लें
घरौंदे में जज़्बात
मेरी किताब।

~ अरुण आशरी

हारे न हम
जीत न सके गम
बढ़े कदम।

~ अल्पा तन्ना

एक ही छत
कक्षों में गिने साँसें
मरता घर।

मैया ने छुआ
भर-भरा के फूला
मेरा बटुआ।

रिश्ते उबले
ठंडा करने आयी
उबली चाय।

छुपा लेती माँ
पीपों का खालीपन
भरी आँखों से।

हटाया पेड़
साँसो के द्वार पर
बैठाया यम।

~ अलंकार आच्छा

मुख छिपाये
मौसम का आंगन
जेठ सामने।

रवि खफ़ा है
सन्नाटों में सड़क
नवतपा है।

बिंब प्रयोग
निखरता हाइकु
भावप्रवण।

~ अविनाश बागड़े

करें न रोष
परमार्थ जीवन
बुलन्द जोश।

~ डॉ. आनन्द प्रकाश शाक्य 'आनन्द'

सुंदर धरा
निहारती आकाश
कहाँ प्रकाश।

मूक पर्वत
पेड़ों संग मुस्काए
जीना सिखाए।

ऊँची लहरें
सागर की है शान
गाती है गान।

नीरव रात
निद्रा साधती धरा
देती सहारा।

राधा का दर्द
कृष्ण से बिछड़ना
नीर ढलना।

उदास मन
चिंताओं के बादल
तन पे छाए।

सागर तट
लहरें मचलती
मन को छूती।

अर्ध चंद्रमा
आकाश में लटका
मन भटका।

झिंगुर सदा
रात्रि पे होती फिदा
दिखाती अदा।

अमलतास
पीलें रंग में रंगे
पेड़ में टँगे।

गुलमोहर
मौसम की बहार
जगाए प्यार।

हरित धरा
चीख के कह रही
न काटो पेड़।

पवन चले
झूमते पेड़-पौधे
खुश होकर।

ज्वलंत मुद्दा
परिवेश हो साफ
करो विचार।

बहती नदी
गंदगी से दूषित
दुखी हो रही।

~ **आभा दवे**

लू के थपेड़े
गोरी घूँघट काढ़े
'जेठ' के आते ।

~ **आर० बी० अग्रवाल**

बैसाखी हवा
सहरा में सजाती
रेत रंगोली।

शरीर लेटा
सपनें बुन चला
चंचल मन।

बोझिल रिश्ते
सैलाब उमड़ता
मन सागर।

सरक रही
नीले ख्वाबों की कश्ती
मन सागर।

सूरज डूबा
चांदनी में चहके
अंबर धरा।

संभाल रहे
खट्टें मीठें से लम्हें
फोटो आल्बम।
~ **आरती परीख**

चाँद यूं रूठा
दूध, भात, मलीदा
सब था झूठा।

बाढ़ का पानी
डुबोता जा रहा है
ख़ास निशानी।

खिला गुलाब
आकर्षक कोमल
पूरे शवाब।

निर्जन तट
हँसी- ठिठोली करें
नेत्र युगल।

लू की लपट
जेठ- दुपहरी की
अकुलाहट।

नदी में बाढ़
गर्मी में खाली घड़े
प्यास की मार।

निढाल चाल
खुरदरे-से पाँव
हाल-बेहाल।

मन जलाया
नित नई कलह
सुख न पाया।

विवश होते
देखते हैं शून्य में
लाचार बूढ़े।

~ **आशा ज्योति**

एक ही धाम
यत्र तत्र क्यों ढूंढें
प्राणों में राम।

धरा का हास
देखे जल दर्पण
सारा आकाश।

नीलाभ ग्रह
पूजनीय विग्रह
मन मंदिर।

रौद्र दोहन
छीजते संसाधन
कहीं तो रुके।

~ इन्दिरा किसलय

एक प्रणाम
बदले परिणाम
बढ़े सम्मान।

ज्योति जलाएँ
आशा की जहान में
तम मिटायें।

~ ए. ए. लूका

होती तलब
एक कप चाय की
साधे अकल।

देख चाय की
यहाँ मांग बहुत
गुमटी खोली।

हरी पत्तियाँ
अदरक लवंग
मन मतंग।

सौजन्यता है
गर्म चाय पिलाना
स्नेह दिखाना।

~ अंजनी कुमार 'सुधाकर'

खिला गुलाब
चूमा हसीं होंठो ने
खिल उठा मैं।

~ कल्पना कामदार

एक आधार
बाबा की गुरबानी
वेदों का सार।

पक्षी चहके
पवन गीत गाए
पेड़ सुनते।

नव निर्माण
घर पक्के हो गए
रिश्ते कच्चे हैं।

सवेरे धुंध
प्याले से उठी भाप
चढ़ी आकाश।

~ कश्मीरी लाल चावला

सूखे तालाब
मेघ ताकते पक्षी
जीवन आस।

जनता मौन
बेटियों की इज्ज़त
बचाए कौन ?

~ क्रांति

बाबा की वाणी
माफिया सर्वनाश
शांति अपार।

वृक्षारोपण
हवा पानी लकड़ी
मिली सौगात।

कठोर श्रम
तन मन जर्जर
व्यथाा भी कथा।

चाय का साथ
चर्चा जग विशाल
मस्ती अपार।

धर्म का ज्ञान
संस्कार व सभ्यता
मनु कल्याण।

फोटो प्रभाव
सम्मुख बिता कल
आँखों में आँसू।

~ कुन्दन पाटिल

सिंधु किनारे
नारियल का पेड़
पानी मे भेद।

~ कैलाश कल्ला

मानव तन
सुकर्म परिणाम
ईशोपहार।

~ गीता पुरोहित

बौराया आम
मह मह महके
गुलाबी शाम।

~ गंगा पांडेय 'भावुक'

सड़क आई
शहर से गांव तक
हो गई बूढ़ी।

सबको छाया
देते रास्ते के वृक्ष
रिश्ता न पूछें।

~ चंद्रभान मैनवाल

सूर्य का ताप
सुखते नदी सोते
धरा का श्राप।

रूई-सी है माँ
गृहस्थी के चरखे
कतती रही।

चटक धूप
बरगद का छांव
यादों में गांव।

~ चिन्मय शुक्ल

वक्त पे आती
आम की बहारों में
कोकिला गाती।

बैशाखी आई
फसल की कटाई
उल्लास लाई।

नन्ही सी जान
कमर तोड़ बस्ता
हाँफते बच्चे।

मन का पंछी
भटकता दूर तक
संतुष्टि कहाँ।

~ चंद्रभान मैनवाल

अथक श्रम
खुरदुरे हाथों में
दो जून रोटी।

अन्न उगाते
खेतिहर श्रमिक
भूखे उदर।

आए चुनाव
डूबे उतरे नाव
कुर्सी का दांव।

~ ज्योतिर्मयी पंत

बालकार्मिक
जरा सा मुस्कुराया
फूटी लहर।

~ तुकाराम खिल्लारे

हो गया मौन
दिखा जो वृद्धाश्रम
फिर ये कौन।

~ डॉ. दीपा

मरु विजय
केतन फेहराओ
कोमल प्राण।

~ देवयानी बनर्जी

कोयल कूके
नित मनवा हूके
प्यार न चूके।

हँसी मज़ाक
ज़िन्दगी का आधार
दें इसे धार।

हँसना कभी
रखना न उधार
बनेगा भार।

तुम्हारे नाम
है सूरज की लाली
ये शाम वाली।

चंपा के फूल
तल्ख़ियों में बने थे
दंश के शूल।

मन अटारी
खोल के भावनाएँ
बिछा दीं सारी।

करे वर्जिश
दिनकर का दिल
बढ़े तपिश।

क्या है माजरा
हमेशा भटकता
मन बावरा।

चरर चर्र
करे सोते समय
टूटी खटिया।

नींद भगाये
रात के सन्नाटे में
बोले खटिया।

~ निगम राज़

सिसक रही
बाण की शैय्या पर
घायल नींद !

देहली दीप
दो घरों को उजाले
प्यारी बिटिया !

~ नीता छेडा

खिली कलियाँ
नर्तन करें वृक्ष
हँसा प्रभात।

पेड़ों की छैंया
खेलें गाएं परिंदे
आँख मिचौली।

अमूल्य धरा
मांगती प्राणवायु
मनु समझ ?

ऊंचे पर्वत
देख भू इठलाए
रख तू मान।

रेत सिखाती
वक्त पे बदलना
सदा मुस्काना।

लता लिपटे
सजनी सी वृक्ष से
मधुमास में।

चंद्र निहारे
नदी जल में बिंब
चमके रात।

मेघ- सा मन
दामिनी सी चाहत
देती राहत।

~ डॉ. नीना छिब्बर

टहनी सूखी
सोच-लोच से मुक्त
दुनिया रूठी।

हैं मजबूर
दिहाड़ी मज़दूर
रोटी से दूर।

मधुशालाएँ
खुद सजी सँवरी
घर जलाएँ।

~ पवन कुमार जैन

आस का रवि
ढले मजबूरन
साँझ वीरान।

नींद में डूबा
देख कर संसार
हँसे चाँदनी।

आसमान का
उन्मुक्त अट्टहास
बरसे आग।

टेढ़ी खीर है
दिल का कहीं लगाना
चाय बनाना।

उड़ा ले गई
चाय की प्याली, चिंता
धुएँ के संग।

~ प्रतिमा प्रधान

अमा की रात
खोजे चंद चकोर
आस उदास।

गीली पाँखुरी
जरा सा छेड़ा मैंने
ओस बिखरी।

मन विटप
चलने लगी आरी
सिहरी पाखी।

इश्क़ जहर
न रहा पीने वाला
जीने लायक।

थोड़ी जमीन
थोड़ा सा आसमान
ये जिन्दगानी।

बहता पानी
फितरत-ए-इश्क
थमता नहीं।

दोस्ती चहकी
चाय एक बहाना
प्रीत महकी।

मिली राहत
मानसूनी हवा ने
दे दी दस्तक।

पेड़ लगाएँ
मेघ लाएंगे जल
जीवन पाएँ।

-प्रदीप कुमार दाश दीपक

धवल केश
अनुभवों की धूप
बने ओजस्वी।

बोझिल आंखें
सपनों की आहट
नींद खटोला।

पीत कनेर
घंटियां बजा रहा
हवा के संग।

अमलतास
लगे स्वर्ण झूमर
करें स्वागत।

चारु चंद्रिका
झील मे निहारती
रूप सलोना।

हरसिंगार
झरते, झर झर
मुदित धरा।

हरसिंगार
हो रहे समर्पित
हर्ष अपार।

मेघों की ओट
चांद ओझल हुआ
तारे गवाह।

जादुई रात
चंदा करता जादू
दर्शक तारे।

शुभ प्रभात
सूर्य ने छलकाई
स्वर्ण गगरी।

खुली कोपलें
भविष्य निहारता
नन्हा सा बीज।

भ्रमर डोले
फूलों की गली गली
हर्षित कली।

नवप्रभात
प्यारी पाखी चहके
पीपल छैयां।

आशावान थी
हठीली नागफनी
खिलाऐ फूल।

~ प्रमोदिनी शर्मा

आँचल माँ का
है सुरक्षा कवच
चैन की नींद !

माँ का आँचल
ओजोन की छतरी
बचाए सृष्टि !

हाइकु काव्य
सांकेतिक प्रस्तुति
विराट सत्य।

तीन पंक्तियाँ
भाव विचार बिम्ब
बने हाइकु।

मृदु सरिता
भाव बोध प्रकृति
लघु कविता।

बंधुआ साँसें
काया रूपी हवेली
जीवन कर्ज !

काव्य उपज
भाषा का खलिहान
आखर मोती !

आहों का धुआं
मेहनत की आग
राह आसान !

स्वेद की बूंदें
सूखने से पहले
पारश्रमिक !

जीवन नैय्या
भवसागर पार
आखिरी सच !

बैरन नींद
नयनों से ओझल
प्रिय की याद !

मन का सुआ
स्वर्ण पिंजरे कैद
बंधन खेद !

छँट गये थे
ख़्वाहिशों के बादल
निकला चाँद !

पका है फल
शाख पर धूप में
नया जीवन !

हुआ विनम्र
फलों से लदा वृक्ष
ज्ञानी पुरुष !

फूलों की जुबां
तितली की कहानी
मन का वन !

~ प्रवीण बी. सिन्दल

समझे कौन
वसुन्धरा की पीर
पसरा मौन !

वृक्षारोपण
प्रकृति-संतुलन
सुखी जीवन !

चूँ चूँ करती
ठूँठ पे बैठी चिड़ी
बादल छाए !

कंक्रीट वन
विषैला पानी-हवा
मेज पे दवा !

ढूँढता छाँव
थका लकड़हारा
घायल पाँव !

आँखों में पानी
नदी खुद प्यासी है
युगों-युगों से !

पुष्पित मन
प्रकृति-संरक्षण
लक्ष्य वरण !

सन्यासी सूर्य
पीले वस्त्र पहने
भक्त निहारे !

~ पुष्पा सिंघी

देखे मां बाट
बंटवारे के बाद
कहां हो खाट।

~ पूजा महेश

ताप से तपी
सूनी सारी गलियाँ
घूमते पत्ते।

~ पुष्पा मेहरा

नदी चली है
सागर से मिलने
मीठे से खारा।

~ पुष्पा सिन्हा

मौन अधिक
भाषा शब्द पर्याप्त
बुद्ध स्वभाव।

अद्भुत मन
मौन और गंभीर
आकार तुम।

~ पुष्पा त्रिपाठी 'पुष्प'

जल की आस
मुंडेर पर बैठी
नन्ही गौरैया।

~ पूनम मिश्रा 'पूर्णिमा'

दुख में छाया
सुख में बरकत
माँ का आँचल।

~ डॉ. भारती वर्मा 'बौड़ाई'

हवा में आई
गुंड़ई-सी रफ़्तार
तोड़े हैं तार।

जेठ ज्यों तपा
भर लाई हौंसले
ठंडी- सी हवा ।

हवा दीवानी
मेघ बरस गया
वो , तब जानी ।

आलस भरे
पुरवा दृग मींचे
पेड़ों के नीचे।

रस्तों में धूल
पछुवा ने उड़ाके
मारे ठहाके।

चिंता में खेत
खलिहान में खड़ा
उड़ाये रेत।

मौसम खुला
खेत हुआ सार्थक
फूला-औ-फला ।

कर्ज के पासे
चूल्हा रखें उदास
पूरे चौमासे।

~ भीकम सिंह

माता की गोद
पिता की फटकार
सुखद यादें।

खेल खिलौने
सखियों संग खेल
दौड़ता वक्त।

कठोर श्रम
करते मजदूर
उपजे सोना।

~ मधु गुप्ता 'महक'

घट ओढ़नी
ओढ़कर झाँकता
रवि का तेज।

वर्षा की बूंद
यह जीवन दान
अमृत धार।

धरा पे डाल
प्रकाश का बिछौना
किरणें लेटी।

दीन का घर
बाढ़ करे तांडव
जल समाधि।

धान की बाली
आशान्वित नजर
भूखा किसान।

~ मधु सिंघी

कंक्रीट गाँव
आधुनिकीकरण
गायब छाँव।

बादल अड़े
किसान भयभीत
गेहूँ हैं खड़े।

गुस्से में पेड़
दरारों से भरी है
खेत की मेड़।

~ मनीष कुमार श्रीवास्तव

पृथ्वी की शान
किरणें करा रहीं
धूप से स्नान।

~ डॉ. मिथिलेश दीक्षित

नीम के फूल
छिड़क रहे इत्र
महके चैत्र।

मन के पन्ने
सहेजे विरासत
स्मृति के चिह्न।

शब्दों ने भरी
मकानों की दिवार
दिली दरार।

ईर्ष्यालु मन
देख पराया धन
जलाते तन।

देख अंधेरे
सूर्यमुखी रिश्तों ने
बदले रुख़।

उतर गयी
जिंदगी की थकान
खुशी के रास्ते।

सिल के पत्ते
बुन रुई सा नीड़
फुदकी चिड़ी।

~ मीनाक्षी कुमावत 'मीरा'

मिलता नहीं
सुख चैन आराम
जीना हराम।

डसती रही
डायन मंहगाई
पलकें नम।

गर्म हवाएं
कहर बरपाए
हंटर मारे।

लंबी कतार
बेरोज़गार युवा
मौन समाज।

आज बेटियां
छू रही है आसमां
लोग हैरान।

~ मीरा सिंह 'मीरा'

संकट रोके
माँ हिमालय जैसी
ममता भरी।

~ मुकेश शर्मा 'ओम'

ममता रूप
माँ आँचल की छाँव
सदा अनूप।

पिया प्रीत में
मनुहार की चाय
जग रीत में।

प्रेम का स्वाद
अलबेली सी चाय
पिया की याद।

~ मुरारी स्वामी

मेरा वज़ूद
मक्खन सा उभरा
ममता हांडी।

गर्भ का चाक
दिया आकार मां ने
उकेरा मुझे।

~ मंजु महिमा

मां तेरा स्पर्श
एहसास दिलाती
यादों के पल।

~ मंजुलता गुप्ता

संवाद नहीं
तो समझो कि घर
आबाद नहीं।

आंगन सूना
बच्चे बसे विदेश
सन्नाटा दूना।

बड़ी भीड़ है
शहर अजनबी
दूर नीड़ है।

माँ, तेरी याद
मंदिर की आरती
जैसे प्रसाद।

हाय- बुढ़ापा
फाड़े गए ख़त का
बाक़ी लिफाफा।

~ राकेश भैया

चढ़ा है पारा
बैठा है नीम तले
दिन बेचारा।

बाँह पसार
खड़े हैं देवदार
छूते आकाश।

खाली हैं खेत
धूप करे आखेट
भागते मृग।

नव पल्लव
पतझर के अंश
वृक्ष वल्लभ।

चढ़े वैशाख
हमलावर है लू
सूखती शाख।

माह वैशाख
सूर्य तमतमाए
छाँह लुभाये।

सूरज क्रुद्ध
किरणें लड़ रहीं
भू पर युद्ध।

झरें बादल
यायावर पागल
ऋतु न रीत।

बहे बयार
मदमस्त तड़ित
भय की प्रीत।

खुद से युद्ध
राग-द्वेष से मुक्त
निखरे बुद्ध।

शुभ-संदेश
सत्य, अहिंसा, प्रेम
बुद्ध अंदेश।

ज्येष्ठ महीना
नौतपा का प्रकोप
बहे पसीना।

तम को तोड़
निहारती रश्मियां
घूंघट खोल।

जेठ की भोर
चहक उठे खग
मृदु है शोर।

~ राजकिशोर राजपूत

खट्टम खट्ट
चल उठे चिता पै
हिस्से को लट्ठ।

छोड़ा है नीड़
बहकावे में आके
बनने भीड़।

~ राजकुमार चौहान

दो जून रोटी
होटलों में पहुंच
हो गयी मोटी।

कद्र न जाने
धनी न पहचाने
दो जून रोटी।

~ राजीव नामदेव
'राना लिधौरी'

पके फसल
हलधर हर्षित
खुशी मनाए।

नव कोपले
ठूंठ हरे हो जाते
वैशाख आते।

सूरज ढला
चमक उठे तारे
वक्त बदला।

दूर क्षितिज
देख अरुणोदय
पाखी चहके।

मुस्काई धरा
प्रकृति खिल उठी
उतरी धूप।

बिखरे पन्ने
मुश्किल से सहेजे
तमाम उम्र।

तैरती बूँद
सप्तवर्ण बिखरे
धूप ने छूआ।

पछुआ आई
महक उठी धरा
नाचे पपीहा।

नव पल्लव
तरू डाल सुहाए
चंचल लाल।

टांग दे उम्र
पकड़े तितलियाँ
खिलखिलाए।

मिले मित्रों से
प्रतिगामी जीवन
याद सहेजे।

लालची मन
देखे पेड़ों में धन
काटता वन।

पोथी दरिया
बुझती ज्ञान तृषा
मन को धोएं ।

रीते कलश
वीरान पनघट
शीशी में जल।

छोटा सा बीज
दरार में पनपे
धैर्य के साथ।

जला जंगल
राख में उग जाते
आशा के बीज।

दिल में दर्द
भर आए नयन
छलक गए।

बिना नीड़ के
कहाँ ठौर ठिकाना
उड़ते पंछी।

अश्कों की लड़ी
नयनों में तैरते
अधूरे स्वप्न।

शर्म से झुकी
लहराती फसल
झूमने लगी।

पीपल पात
भर आई टहनी
सघन छाँव।

दिल के रिश्ते
हर मर्ज की दवा
दोस्तों में चाय।

तपती धरा
हवा बेगानी हुई
छाँह आसरा।

पीपल पात
भर आई टहनी
सघन छाँव।

तपती धरा
स्नेह की बूँद पड़ी
महक उठी।

उगने लगे
कागज़ पर पेड़
वनों में घर।

-राजेन्द्र सिंह राठौड

सबको कमी
आसमां के पास भी
नहीं है जमीं।

चैन के बिना
रुक गयी जिन्दगी
साइकिल सी।

~ राधाबल्लभ अग्रवाल

सूरज आज
अपने ताप से ही
ख़ुद जला है।

धरा क्या करे
कोख जने ने ही तो
ख़ुद छला है।

कड़वी नीम
मीठी छाँह देती है
सुख बड़ा है।

~ रीमा दीवान चड्ढा

सांझ की बेला
झुर्री ने दी दस्तक
बेचैन उम्र।

बूढ़ा दरख्त
झुकी हुई टहनी
छांव देती है।

निस्तब्ध रात
नींद माँझी ले चले
स्वप्न की नाव।

ढलती उम्र
तट पे सूनी नाव
उदास खड़ी।

~ रूबी दास 'अरु'

बढ़ती चाह
महँगाई का दौर
कैसे निर्वाह।

धन - दौलत
केवल एक ध्येय
मन आहत।

वैशाख मास
सर्वत्र गर्म हवा
रुकती साँस।

धूप कड़क
है चलना दूभर
जली सड़क।

लू की लपट
बटोही सहमा है
ताप विकट।

शीतल छाया ?
वृक्षों की संख्या घटी
झुलसी काया।

स्वेद झरता
श्रमिक के मन में
जोश भरता।

आती है याद
माँ ! समक्ष आकर
करो संवाद।

मौन बाँचते
मनस्थ शब्द लोग
चक्षु नाचते।

प्रश्न उठते
होते नहीं हैं हल
मन विकल।

संतोष कब ?
नई आशा के साथ
भागते सब।

कौन किसका ?
मतलब निकला
शीघ्र खिसका।

वृक्ष लगाएँ
उदास न हो धरा
खुशियाँ पाएँ।

बढ़ता ताप
नहीं शीतल जल
उठता भाप।

मेघ बरसें
मानसूनी आहट
सभी हरषें।

~ डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'

सीधा सरल
परहित जीवन
निहित सुख।

जीवन गीत
गुनगुनाते चल
बने संगीत।

नयन कोर
बांधते दृग-जल
भाव छिपाते।

जीवन नैया
सुख दुख किनारे
पार लगाए।

जीवन नैया
डोलती मझधार
कैसे हो पार।

जीवन यात्रा
रिश्तों की नाव संग
चली तरंग।

गंगा का जल
नाविक पखारता
प्रभु के पद।

~ वृंदा पंचभाई

सूखे हैं फूल
सड़क पर धूल
हवा में गंध।

तपती धरा
भानु ताप प्रताप
व्याकुल जन।

लड़े न भागे
सर छिपाए रेत
शुतुरमुर्ग।

~ डॉ. शेख अब्दुल वहाब

सूखे हैं फूल
तितली है बेबस
मिले न रस।

सूरज ढला
पशु-पक्षी का झुंड
घर को चला।

घोर निशा में
टिम टिम करते
दिखते तारे।

~ सत्येन्द्र छिब्बर

सूरज डॉन
त्रस्त है धरा व्योम
साधेगा कौन ?

उबला सिंधु
लांघ कर मर्यादा
मिटाता हस्ती।

~ सन्तोष खन्ना

अकेलापन
कर देती काफूर
चाय की चुस्की।

~ सरस दरबारी

तेज अंधड़
प्रकृति आक्रोशित
पृथ्वी कंपन।

धूप का मारा
पेड़ के छांव तले
यात्री बेचारा।

बैसाख माह
मिट्टी के बर्तन में
दही जामन।

बैसाख आया
जीभ चटोरी मांगे
आम का पाना।

मिट्टी का चूल्हा
मटकी में पकाती
मम्मी गोरस।

कड़क धूप
तरुवर की छाँव
मिले सुकून।

उर्जित मन
सचमुच बताए
लक्ष्य की दिशा।

भोर वंदन
चु चु के कलरव
मन को भाए।

माँ की हथेली
सदैव सिरहाने
हाथ फेरती।

याद है मुझे
दहकते अंगारे
मांगे तो जले।

संकल्प शक्ति
शुभ श्रेष्ठ व दृढ़
होता फलित।

मां का स्पर्श
सुखद अनुभूति
भरे उत्कर्ष।

तपती गर्मी
खेतों को संवारते
कृषक कर्मी।

टूटी झोपड़ी
राहगीर को मिला
एक सराय।

कड़क धूप
स्वेद से तरबतर
बेचैनी खूब।

-स्वाति गुप्ता 'नीरव'

परिंदे ढूंढे
आशियाना सांझ को
बिताने रात।

मेरी गौरैया
जा बैठी दूर देश
मैं ढूंढूँ कहाँ।

~ सीमा शर्मा

थिरके हाथ
चाक पे कुम्हार के
मिट्टी ले रूप।

अमलतास
हवा में लहराई
पीली ओढ़नी।

~ सुजाता शिवेन

नव मुकुल
आह्लादित विटप
आया बसंत।

~ सुधा मिश्र

अंधेरी रात
धीरे चंद्रमा झांके
वृक्षों की ओट।

नभ से झरे
अमृत की बौछार
भीगे संसार।

ओस की बूंद
धरा पे आई लेके
आशा की डोर।

श्वेत चादर
पत्तियों पर बिछी
बूटियां कढी।

तारों सी लगें
बूटियां चमकती
धरा हंसती।

आए हिलकी
कान्हा तेरी याद में
आंखें छलकी।

दो दिल मिले
ना कुछ भेदभाव
कांटों में खिले।

है लाजबाब
जंगल के फूल का
नहीं जबाब।

सह के ताप
हँसे गुलमोहर
अपने आप।

ग्रीष्म तपन
हुआ दूभर जीना
छूटे पसीना।

नन्ही गौरैया
सूना देख घोंसला
भई उदास।

ओस की बूंदें
सुगंध ने खींच ली
अपनी ओर।

गांव की माटी
कोने में रहने दो
बूढ़े की लाठी।

नदी किनारे
रवि छिपने लगा
झांकते तारे।

झरना सूखे
धूप है बेहताशा
प्यासी चिड़िया।

~ सुनीता दीक्षित

रात बीतती
करवटें बदलते
तारे गिनते।

~ सुनंदा भावे

माँ छाया देती
ममता की मूरत
साक्षात देवी।

पलाश खिले
उपवन दहके
जीया बहके।

ऊषा किरण
गगन लाल करें
आनंद भरे।

एक शब्द माँ
नव जीवन दाता
सृष्टि निर्माता।

प्रेम श्रृंगार
जीवन व्यवहार
सृजनहार।

प्यासा जीवन
सूखा पर्यावरण
बिकता पानी।

सूखे तालाब
जहरीली नदियां
शीशी में पानी।

पत्थर दिल
नासमझ जाहिल
बहाता पानी।

सबसे भारी
कागज गाँधी धारी
न्याय गांधारी।

भूखा आदमी
रोटी को पहचाने
जीवन माने।

चाँद सी गोल
रोटी है अनमोल
भूख का मोल।

रोटी है मीठी
बासी हो या हो सूखी
अमृत जैसी।

झोपड़ी छोटी
प्यार बसा दिल में
खुश रहती।

बड़ी हवेली
नफरत की मारी
रिश्तों में हारी।

नदियां सूखी
वातावरण गर्म
मानव कर्म।

~ सुभाष शर्मा

वीरान गाँव
रोज़ी - रोटी खोजते
दौड़ते पाँव।

~ सुरेंद्र बांसल

नया है दौर
प्रेम रेत का टीला
बदले ठौर।

श्रमिक जन
बुनते हैं रेशम
नंगा बदन।

श्रम का लेखा
लाँघी न गयी हाय!
गरीबी रेखा।

गर्भ में शिशु
सलाई पर बुने
माँ मृदु स्वप्न।

-डॉ. सुरंगमा यादव

जीवन वृत
भटकना सिद्धार्थ
स्थिरता बुद्ध।

नन्ही चिड़िया
खून सना खंजर
काटता पंख।

बोन्साई वट
वेदनाओं का धुँआ
सूखते रिश्ते।

धूल-धूसर
रेत पगडंडियाँ
खोई मंजिलें।

~ सुशील शर्मा

चीर हरण
आज भी तो है जारी
मौन क्यों नारी।

नारी की व्यथा
द्रौपदी, मीरा, राधा
सीता की कथा।

गीता का सार
धर्म, कर्म, मर्म का
ज्ञान भण्डार !

पाप का फल
हर कोई चखेगा
आज या कल !

राजा व रंक
आयेंगे व जायेंगे
एक ही संग !

~ सूर्यनारायण गुप्त 'सूर्य'

जीवन सार
प्यार बांटते चलें
ज़िंदगी छोटी।

पहन लेते
अल्फ़ाज़ों के लिबास
मेरे जज़्बात।

~ संतोष बुधराजा

माँ को जानना
अम्बर को बांधना
नामुमकिन।

सेल्फी ही सही
बच्चे मिलने आये
माँ को है खुशी।

मातृ दिवस
महिलाश्रम में माँ
रोई सिसक।

दी नहीं दवा
मरने के पश्चात
दे दी दावत।

अटके बोल
शब्दों की हेराफेरी
पकड़े चोरी।

बचपन में
बैठ पिता के कंधे
छुई बुलंदी।

बिकते देखी
दो जून की रोटी को
बोटी व बेटी।

सिखा दिया है
पिता ने कंधे बैठा
बुलंदी छूना।

वंश बचाने
ठूंठ से पड़ी फूट
कुछ कोंपलें।

लेनी है गोद
नर्सरी में पलती
नाजुक पौध।

नोंच के धरा
चांद पे पग धरा
मंगल डरा।

~ हंस जैन

लोमानुलोम
ऋतुओं का मिलन
बदले व्योम।

चाँद पानी में
किरदार उभरा
यूँ कहानी में।

नदी तरसे
पनघट हुए सूने
टूटे सपने।

माथे पसीना
चिलचिलाती धूप
जेठ महिना।

माटी की गंध
वातावरण नम
लिखे निबंध।

~ श्रवण चोरनेले 'श्रवण'

लू के थपेड़े
वैशाख का महीना
हवा बेचैन।

नीम-निबौरी
मीठी-कड़वाहट
स्वास्थ्य वर्धक।

पेड़ लगाना
हरीतिमा की रक्षा
जीवन बीमा।

श्रीराम साहू अकेला

हाइबुन –

चन्द्रभागा में सूर्योदय

देह ठठरी, जब तक जीवन है, भोग व आकांक्षाओं के वशीभूत होती रहेगी, इसमें आश्चर्य क्या है ? यात्रा सबकी अनवरत जारी रहती है, मनुष्य के जीवन में कोई-कोई यात्रा बड़े महत्व की हो जाती हैं। साधु सन्यासी तो ध्यान की अवस्था में पूरी दुनिया की यात्रा चंद पलों में कर लेते हैं क्योंकि ध्यान की शक्ति बहुत बड़ी है। तन तो साध लोगे, मन को साध पाना क्या सबके लिए इतना सहज है, नहीं न, जी सच कहते हैं, बिल्कुल नहीं।

प्रातः काल, समुद्री तट चंद्रभागा पर सूर्योदय की प्रतीक्षा, परंतु अड़चन डालते पावस के कुछ मेघ धमाचौकड़ी करते कह रहे कि आज तो सूरज हमारे आगोश में। परंतु रोक न सके मेघ, श्रद्धालुओं की प्रतीक्षा को सार्थक करते हुए उगने लगे देव सूर्य एवं उनकी पहली किरण से जागने लगी धरा, जाग उठा चन्द्रभागा का तट। चन्द्रभागा के समुद्री तट पर सूर्योदय का दर्शन एवं सूर्य देव की अर्चना में दीप पूजन अनिर्वचनीय आनंद की अनुभूति, मानो यात्रा सार्थक हुई, जीवन सफल हुआ। मुख से अनायास शब्द निकले .....

देव दर्शन
दीप की यात्रा धन्य
शुभ पावन।

~ प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

डॉ. मिथिलेश दीक्षित जी के संपादन में- 'हिन्दी हाइकु के स्वर्णिम पथ पर चिह्नित मील के पत्थर के रूप में- हिन्दी हाइकु काव्य के प्रमुख हस्ताक्षर'

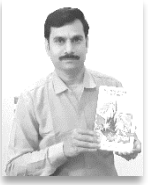

संस्कृत शब्द 'ध्यान' चीनी में 'चान' या 'छान' तथा जापान में 'जेन' हुआ। जापानी जेन संत कवियों द्वारा सहज ध्यान से सृजित लघु काव्य रचना 'हाइकु' भारतीय आध्यात्मिकता से पूरी तरह प्रभावित है। भारत में अच्छे हाइकुओं अथवा अच्छे रचनाकारों की कमी नहीं है, परंतु यहाँ हाइकु सृजन के क्षेत्र में संख्यात्मकता का एक दंभ व्याप्त है। हाइकु के मर्म को समझकर यहाँ सृजन करने वाले रचनाकारों की नितांत कमी है। 'हिन्दी हाइकु काव्य के प्रमुख हस्ताक्षर' ग्रंथ निश्चय ही इस संख्यात्मकता के गुरुर को तोड़ने का काम करता है।

देश-विदेश में हाइकु का परचम फहराने वाली हिंदी हाइकु की परम विदुषी डॉ. मिथिलेश दीक्षित जी द्वारा संपादित 'हिंदी हाइकु काव्य के प्रमुख हस्ताक्षर' ग्रंथ में उर्मिला कौल, डॉ. कुंदन लाल उप्रेती, डॉ. जगदीश व्योम, प्रदीप कुमार दास 'दीपक', डॉ. भगवतशरण अग्रवाल, डॉ. मिथिलेश दीक्षित, डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव, रामनिवास पंथी, राजेंद्र वर्मा, शंभू शरण द्विवेदी 'बंधु' एवं डॉ. शैल रस्तोगी जी जैसे हिंदी हाइकु के ग्यारह महान साधकों को हिंदी के ग्यारह प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में चयन कर इन रचनाकारों के परिचय, अवदान तथा इनके प्रत्येक के पचास-पचास उत्कृष्ट हाइकुओं को प्रस्तुत कर वर्तमान तथा आगामी भविष्य की पीढ़ी के रचनाकारों को मार्गदर्शन प्रदान करने का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कार्य हुआ है। इस महनीय ग्रंथ के सम्माननीय रचनाकारों में मुझे भी सम्मिलित करने हेतु मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हुए आ. दीदी मिथिलेश दीक्षित जी के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता व साथ ही मनःपूर्वक हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

हिंदी हाइकु के शलाका पुरुष स्वर्गीय प्रोफेसर आदित्य प्रताप सिंह जी तथा हाइकु के महान साधक स्वर्गीय डॉ. लक्ष्मण प्रसाद नायक जी को समर्पित यह महत्वपूर्ण धरोहर ग्रंथ निश्चय ही हिन्दी हाइकु के प्रशस्त पथ पर मील के पत्थर (mile stone) रुप में कार्य करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

~ प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संपादक : हाइकु मञ्जूषा

प्रकृति एवं हाइबुन

(हाइबुन संकलन)

संपादक - डॉ. मिथिलेश दीक्षित

हाइबुन एक गद्य कविता है, इसके गद्य में पद्य के पुट रहते हैं। इसे यात्रा विवरण के रुप में लिखा जाता है। यात्रा संदर्भ में बाशो का कथन है कि - "हर दिन एक यात्रा है, और यात्रा ही घर है।" हाइबुन का "गद्य" हाइकु का स्पष्टीकरण नहीं होता और इसमें उल्लेखित हाइकु गद्य की निरंतरता भी नहीं है। गद्य पाठ में प्रत्येक शब्द की गिनती गद्य कविता की तरह होनी चाहिए। स्तरीय हाइबुन गद्य पाठ को सीमित करता है, जैसे कि उत्तम हाइबुन में 20 से 180 शब्द एवं अधिकतम दो पैराग्राफ़ पर्याप्त हैं। इस लघु गद्य में कसावट आवश्यक है। हाइबुन में आमतौर पर केवल एक हाइकु सम्मिलित किया जाता है, जो गद्य के बाद होता है, गद्य के चरमोत्कर्ष के रूप में "हाइकु" अपनी सेवा प्रदान करते हुए हाइबुन का प्रतिनिधित्व करता है।

गद्य और हाइकु दोनों के मिश्रण में रस ही महत्वपूर्ण है। गद्य को उस गहराई से जोड़ना चाहिए जिसके साथ हम हाइकु का अनुभव कर सकें। हाइबुन की महत्ता हाइकु को गद्य के अर्थ से सहज जोड़ना बहुत महत्वपूर्ण है। हाइबुन के लेखक को संवेदनशील होकर भी निरपेक्ष होना चाहिए अन्यथा यात्रा के स्थान पर यात्री के प्रधान हो उठने की संभावनाएं बढ़ जाएगी, तथा वह अभिव्यक्त यात्रा साहित्य हाइबुन न रहकर आत्म चरित्र या आत्म स्मरण बन सकता है। इस विधा के पीछे का उद्देश्य हाइबुन लेखक के रमणीय अनुभवों को हुबहू पाठक तक प्रेषित करना है। जिसके माध्यम से पाठक उस अनुभव को आत्मसात कर सके उसे अनुभव कर सके।

जापानी हाइकु कवि बाशो ने इस विधा का प्रारंभ 1690 में किया। जुलाई 2014 में अयन प्रकाशन से प्रकाशित डॉ. सुधा गुप्ता जी की कृति 'सफर के छाले हैं' में पहली बार हिन्दी में उनके 37 हाइबुन प्रकाशन में आए हैं। अंजलि देवधर जी द्वारा 'journeys' (भारत

का प्रथम हाइबुन संकलन) में 25 रचनाकारों के अंग्रेजी हाइबुन, वर्ष 2015 में 'journeys 2015' (द्वितीय हाइबुन संकलन), जिसमें 31 कवियों के 145 हाइबुन तथा वर्ष 2017 में 'journeys 2017' (तीसरा हाइबुन संकलन) प्रकाशन में आया था, जिसमें 29 कवियों के 133 अंग्रेजी हाइबुन प्रकाशित हुए थे। वर्ष 2014 में भारतीय कवि परेश तिवारी जी के 25 अंग्रेजी हाइबुन 'An inch of sky' में संग्रहित हुए हैं, वर्ष 2017 में 'Raindrops chasing Raindrops' में इनके 61 अंग्रेजी हाइबुन प्रकाशित हुए हैं तथा वर्ष 2019 में संपादक स्टीव हॉज और परेश तिवारी जी के संपादन में 'रेड रिवर' नामक अंग्रेजी हाइबुन संकलन का प्रकाशन हुआ जिसमें 61 रचनाकारों के 102 अंग्रेजी हाइबुन संकलित हुए हैं। वर्ष 2021 जनवरी में 'हाइकु से हाइबुन प्रवाह' में (अविनाश बागड़े जी, इंदिरा किसलय जी एवं मेरे) संयुक्त प्रयास से हाइबुन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था, जिसमें 19 रचनाकारों के हाइबुन आए थे। वर्ष 2021 में ही पूनम मिश्रा पूर्णिमा जी का एक एकल हाइबुन संग्रह अविशा प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है, जिसमें उनके 21 हिन्दी हाइबुन संग्रहित हुए हैं। वर्ष 2021 जून में परम आदरणीय डॉ. मिथिलेश दीक्षित जी के संयोजकत्व में विश्व पर्यावरण दिवस अवसर पर हाइबुन की संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। इसप्रकार हिन्दी में हाइबुन स्थापित होने लगा है। इस बीच बड़े ही आनंद का विषय यह है कि शुभदा बुक्स प्रकाशन द्वारा प्रकाशित इसी वर्ष फरवरी 2023 में डॉ. मिथिलेश दीक्षित जी के संपादन से हिन्दी का प्रथम हाइबुन संकलन 'प्रकृति एवं हाइबुन' का प्रकाशन हुआ है, जिसमें अजय चरणम् जी, आनन्द प्रकाश शाक्य जी, अंजू श्रीवास्तव निगम जी, इन्दिरा किसलय जी, डॉ. कल्पना दुबे जी, कनक हरलालका जी, निहाल चन्द्र शिवहरे जी, नीना छिब्बर जी, प्रदीप कुमार (स्वयं), पुष्पा सिंघी जी, डॉ. मिथिलेश दीक्षित जी, डॉ. रवीन्द्र प्रभात जी, डॉ. लवलेश दत्त जी, वर्षा अग्रवाल जी, सरस दरबारी जी, डॉ. सुषमा सिंह जी, डॉ. सुकेश शर्मा जी, डॉ. सुभाषिनी शर्मा जी एवं डॉ. सुरंगमा यादव जी के नामानुक्रम से 19 रचनाकारों के 72 उत्कृष्ट हाइबुन संग्रहण हुए हैं। निश्चय ही यह एक श्लाघनीय कार्य है, इस कार्य की जितनी भी प्रशंसा करें वह कम होगी। इस ऐतिहासिक महनीय कार्य हेतु आ. दीदी मिथिलेश दीक्षित जी को तथा संकलन में सम्मिलित सभी रचनाकारों को अनेकानेक शुभकामनाएं व हार्दिक बधाइयाँ ।

~ प्रदीप कुमार दाश दीपक

संपादक : हाइकु मञ्जूषा

ऋषितुल्य साहित्यकार : डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव

- रामनिवास पन्थी

जीवन दर्शन के रूप में कुछ ही साहित्यकार कवि एवं चिंतक हुए हैं जिन्होंने अत्यंत गरिमा प्राप्त की है। महात्मा टालस्टाय ने अपना 'कन्फेशन आफ फेथ' लिखा है। जॉर्ज बर्नार्ड शा ने 'बैक टू मैथ्यूजला के इपिलांग' में, एच.जी. वेल्स ने 'फर्स्ट एंड लास्ट थिंग्स' में और समर सेट मॉम ने अपनी-अपनी जीवन निष्ठा का निवेदन किया है, डॉ रमाकान्त श्रीवास्तव ने अतीत का दर्पण एवं विगत और वर्तमान में जीवन की सुव्यवस्थित प्रस्तुति की है 'अतीत का दर्पण' में जहां चिंतन की प्रगाढ़ता, अनुभव की गहराई और निजी अभिव्यक्ति की प्रांजलता समाई हुई है वहीं विगत और वर्तमान में सृजनात्मक दृष्टि से अपने जीवन अनुभव को साक्ष्य मान पर निजी परंपरा के अनुरूप भारतीयता की अभिव्यक्ति की गयी है।

'अतीत का दर्पण' विज्ञ लोगों की दृष्टि में एक सर्वांग सुंदर ग्रंथ है। इसमें जीवन के प्रायः सभी अंगों-पांगों का वर्णन है। डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव जी के तत्व दर्शन की प्रगल्भता उनके हृदय का सौहार्द और उनकी वस्तुनिष्ठता तथा वैज्ञानिकता का प्रत्यय प्रकट हुआ है।

डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव बैसवारा की हृदयभूमि के हैं। उन्होंने बैसवारी को जिया है उसकी गंध में रचे-बसे हैं वहाँ की हवाबतास से वाकिफ हैं, वहाँ की हँसी को जानते हैं, वहाँ की पीड़ा को पहचानते हैं। इसीलिये बैसवारा की घरेलू प्रतीकों और बिम्बों के जरिए ये एक बड़े फलक तक पहुँचते हैं।

मेरी उनकी मुलाकात उन्नाव से निकलने वाली पत्रिका सानुबंध के संपादक के माध्यम से हुई। डॉ. प्रभाकर माचवे से मेरा एक साक्षात्कार था। उन्होंने देखा और अगले अंक में प्रकाशित कर दिया उसे। मेरी दृष्टि उनके व्यक्तित्व पर गड़ी रही। पहली ही दृष्टि में श्रीवास्तव भारत के विरल ऋषि तुल्य साहित्यकार रूप में मिले। रमाकान्त जी 'सांझ का आकाश' कविता संग्रह में मानवात्मा के शिल्पी तथा भाषा के वैशिष्ट्य के लिए चर्चित हुए।

उनके हाइकु संग्रहों के हाइकु भी साहित्य जगत के स्वयंसिद्ध कीर्तमान कहलाये। छोटी सी कविता जिसमें बड़ा से बड़ा विचार तत्व भी हृदय के रस से दिग्ध हो जाता है।

उनके साहित्य का मैं वैसा ही प्रेमी पाठक बना रहा जैसा कोई अनुरक्त अन्वेषी हो सकता है। अनुभूति की अनुकूलता में उनके शब्द लहर-लहर लहराते रहे।

डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव जैसा साहित्यकार एक सदी में एक ही होता है, वह इस सदी के मील के पत्थर के समान थे वह साहित्य साधना के निराला थे और निराला से आशीर्वाद प्राप्त कवि थे, हिंदी साहित्य संसार युगों युगों तक उनके साहित्य के प्रकाश और यश से दीप्तमान रहेगा।

ग्राम - उधनपुर, पोस्ट - बरारा बुजुर्ग,
जिला - रायबरेली (उ.प्र.)
दूरभाष - 95650 35560

हाइकु मञ्जूषा

समसामयिक हाइकु संचयनिका (त्रैमासिक हाइकु पत्रिका)

वार्षिक सदस्यता राशि- 400/-

पंच वर्षीय सदस्यता राशि 1600/-

संरक्षक - 10000/-

हाइकु मञ्जूषा के सदस्य

(1) डॉ. मिथिलेश दीक्षित (संरक्षक)

(1) रुबी दास (पंच वर्षीय), (2) डॉ. सुशीला सिंह (पंच वर्षीय), (3) तुकाराम पुंडलिकराव खिल्लारे (पंच वर्षीय), (4) देवयानी बनर्जी (पंच वर्षीय), (5) डॉ. श्रद्धा वाशिमकर (पंच वर्षीय), (6) सूर्यनारायण गुप्त सूर्य (पंच वर्षीय), (7) अलंकार आच्छा (पंच वर्षीय), (8) अविनाश बागड़े (पंच वर्षीय), (9) अजय चरणम् (पंच वर्षीय)

(1) सुरेन्द्र बांसल (वार्षिक, (2) राजेन्द्र सिंह राठौड़ (वार्षिक), (3) प्रवीण सिंह बी. सिंदल (वार्षिक), (4) चन्द्र प्रभा (वार्षिक), (5) प्रमोदिनी शर्मा (वार्षिक), (6) मीनाक्षी कुमावत 'मीरा' (वार्षिक), (7) अनिमा दास (वार्षिक), (8) श्रवण कालवा (वार्षिक), (9) निर्मला हांडे (वार्षिक), (10) अमिता शाह 'अमी' (वार्षिक), (11) विष्णु शास्त्री 'सरल' (वार्षिक), (12) राधाबल्लभ अग्रवाल (वार्षिक), (13) आर्विली आशेन्द्र लूका (वार्षिक), (14) मनीष कुमार श्रीवास्तव (वार्षिक), (15) पुष्पा मेहरा (वार्षिक)

'हाइकु मञ्जूषा' देश की एकल त्रैमासिक समसामयिक हाइकु पत्रिका का सदस्य बन कर आप भी हाइकु विधा के प्रसार में सहयोगी बनें।

अप्रैल-जून 2023 तक जिन सदस्यों की वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है, इस सूची में उन सदस्यों का नाम विलोपित है। पत्रिका प्राप्ति की निरंतरता के लिए विलोपित तथा नवीन हाइकुकार/पाठक मित्रों से विशेष आग्रह है कि (वार्षिक/पंचवर्षीय) नवीन/नवीनीकरण शुल्क प्रेषित कर पत्रिका के प्रसार में आप अपना अमूल्य सहयोग अवश्य प्रदान करें। आपके स्नेहिल सहयोग की प्रतीक्षा में आपका मित्र-

- प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'
संपादक : हाइकु मञ्जूषा
मो.नं. 7828104111

हार्डबाउंड, पेपर बैक, ई-बुक व ऑडियो-बुक
ISBN के साथ किसी भी
भाषा में प्रकाशन के लिए हमें कॉल करें या लिखें।

सर्व भाषा ट्रस्ट
नई दिल्ली

E-mail : sbtpublication@gmail.com
Contact : 011-3501-3521, 9205461387

sbtpublication sarvbhashatrust Sarv Bhasha Trust
sarvbhashatrust sbhashatrust

हमारे यहाँ से प्रकाशित 30+ भाषाओं में 750+ पुस्तकें
www.sarvbhasha.in पर उपलब्ध हैं।

प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संपादक

हाइकु मञ्जूषा

प्रकाशन

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

011-3501-3521, 9205461387